भारत देश : संस्कृति और खेती
इसे बचाओं . . .
आगे बढ़ाओ ।

हमारा देश भारत है। भारत की संस्कृति विश्व प्रसिद्ध है। एक और ज्ञानी भारतीयों के बारे मे कुछ ऐसा कहते है।

अयं निज: ,परो वेति गणना लघुचेतसाम ।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम ॥

इसका मतलब है की भारत के लोग कभी भी किसी भी व्यक्ति को ये मेरे बन्धु नहीं है , ये मेरा दोस्त नहीं है ऐसा नहीं कहते क्योकि भारतीय उदार हृदयी है वे पुरे विश्व को , पुरे धरती को ही अपना परिवार मनते है। यह हमारी संस्कृति है। एक और उदाहरण है एक कविता ,

देश मे अनेक वर्ग-वर्ण जाति धर्म है
भाव है अनेक बोल है अनेक कर्म है
कोटी - कोटी रूप मे परन्तु एक प्राण है
मन एक ध्यान एक ज्ञान एक गान है ।

यानि की भारत में अनेक जाति और धर्म के लोग हैं लेकिन भारत की विशेषता है 'विविधता में एकता' और इसे कहते हैं भारतीय संस्कृती।

हमारी सस्कृति में हम मानवीयता को दुश्मनी से आगे रकते हैं। भाई चारे के साथ रहना पसंद करते हैं। हमारी सस्कृति को बनाए रखने में कृषी का योगदान महोन्नत है।

हमारी संस्कृति और खेती ।

भारत एक कृषी आधारित देश है। सुभाषितकार कहते हैं की,

कृषि: सर्वार्थ साधिका ।
कृषका: देश रक्षका: ॥

कृषि से हम कुछ भी कर सकते हैं और जो किसान हैं उन्हे देश की रीढ की हड्डी भी कहा जाता है। भारत में ज्यादा तर अनाज, गेहू और भुट्टे को उगया जाता है। दक्षिण भारत में अनाज

प्रमुख खाद्य वस्तु है और उत्तर मे गेहू।
प्रचीन भारत में ज्यादा तर लोग खेती
करते थे।

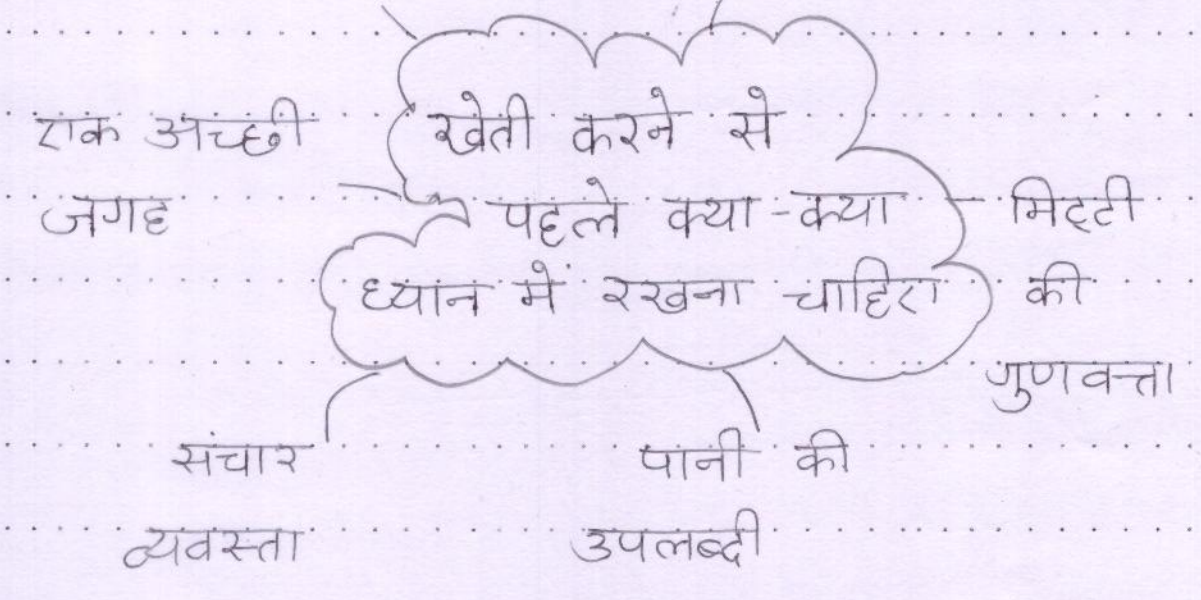

सूक्त जलवायु - अखिर क्या है यह जल
-वायु ?

किसी जगह के दीर्घकालिक मौसम
को हम जलवायु कहते हैं।

उचित तापमान - अनाज को उगाने का
उचित तापमान २५° ज्यादा है। लेकिन गेहू

इससे भी कम है। मिट्टी की गुणवत्ता और जगह का रूप अत्यगत्य है। मिट्टी में काली मिट्टी, लाल मिट्टी, झरने के नीचे की मिट्टी। जगह का रूप - पहाडी इलाखा, समुद्र तट। पानी की उपलब्दी - हमे पता है की पुरातन काल में लोग नही के किनारे रहते थे क्योंकी पानी की उपलब्दी की कोई चिन्ता नहीं और मिट्टी भी बहुत अच्छी थी।

बदलती हुई संस्कृती।

इस इक्कीस वी सदी में जैसे - जैसे समय जा रहा है लोग बदल रहे है संस्कृति बदल रही है लेकिन क्यू?

- पश्चिमी देशो के ऊपर आकर्षित होना
- खेती में आसक्ती कम
- वैज्ञानिक क्षेत्र में अभिवृद्धि
- इसिके औद्योगिकी में बडोत्री

हमारी युवा पीढी पश्चिमी देशों के ऊपर आकर्षित हो रहे हैं। इसके साथ-साथ खेती में निरासक्ति बढ़ रही है। कोई भी परिश्रम करने केलिए तैयार नहीं हैं। सबी को कुर्सी पर बैठकर करनेवाला काम चाहिए। यही कृषी में कमी का मुख्य कारण है।

वैज्ञानिक क्षेत्र के वृध्दि होने के बाद सभी किसानों ने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग शुरु किया और मृदा और जल मालिन्य बढता गया।

इन सभी कारणों से संस्कृती में बदलाव हुआ। इन सबी अडचनों को आगे टाल कर अगर कोई खेती करने की हिम्मत करें तो, वहा भी बहुत सारी समस्याँए हैं।

किसी भी जगह के दीर्घकालिक मौसम में होनेवाले बदलाओं को हम जलवायु परिवर्तन कहते हैं। इसका मुख्य कारण मनुष्य है क्योंकी, मनुष्य ने ही पेड़ो को काटा यानि निर्वनिकरण, नगरीकर _ण, परमाणुप्रयोग, रासायनिक उर्वरकों और कीडनाशी को का उपयोग। जलवायु परिवर्तन के कारण खेती करना बहुत मुश्किल हो गया है। आगोल तापन के कारण तापमान बढ़ रहा है। इस कारण से भी खेती करना मुश्किल हो रहा है। मृदा मालिन्य, जल मालिन्य और कामवालों का न होना भी दूसरे कारण है।

इन सबी कुविधाओं के बीच भी कुछ लोग है जो समस्याओं पर नहीं समाधानों पर गोर कर रहे हैं और सरकार भी इनकी प्रशंसा और मदद कररहा है।

एक उदाहरण है — अकीरा मियावाकी
इन्होंने "मियावाकी" नामक तन्त्र को
खोजा और इसके मदद से हम
छोटी सी जगह पर बड़ा और घाना
अरण्य ही बना सकते है। इसकी
खास बात है की इसमें उपयोग
किए जानेवाले पौदे वो है जो हमारे
गाँव में संस्कृतिक रुप से उगाए जाते
थे। हमारे सस्कृति और खेती को
बचाने केलिए एक अच्छा तरीका है।
दूसरा — मोटे अनाजो को उगाना।
अनाज और जौइ जैसे पौदे ज्यादा
पानी को आकिरण करते है। ऐसा
में नही "उपमृदा संरक्षण इलाके" का
एक रिसर्च बताता है। पंजाब जैसे
राज्यों का मरुस्तलीकरण शुरु होगया
है। क्योंकी वहा जौइ को ज्यादातर
उगाया जाता है। मोटे अनाजो को
उगाने से जलसंरक्षण भी होगा और

मृदा संरक्षण भी होगा क्योकी ये पौदे कम पानी में भी अच्छा फल देते है। सरकार भी राम रास पी को बडा कर किसानों की मदद कर रहा है। और 2018 में देशीय मोटे अनाजों का साल भी मनाया गया था।

भारत अब वैज्ञानिक क्षेत्र मे पीछे नही है ... भारत भी विकासशील से विकसित देश जल्दी ही बन जाएगा।

. भारत की जनसंख्या
. वैज्ञानिक अभिवृध्दि

अगर हम इस जनता का सही मइने में उपयोग करेगों तो हमारी संस्कृति और खेती ऐसी ही बनी रहेगी।

वैज्ञानिक तरीको और तकनीको से हम कृषि को सस्कृति को जोडकर रख सकते। हमारे देश के भविष्य को उज्वल करने में यही है हमारा योग दान।

हमारी संस्कृति मे त्योहार और खेती।

भारत के त्योहार और खेती आपस मे जुडे हुए है।

हम कृषी को तीन समय पर करते है :-

- खारिफ।
- राबी।
- ज़ैद।

केरल में मनाया जानेवाला एक प्रसिद्ध त्योहौर है ओनम, विषु। ओनम में मुख्य तर खेती का योगदान है। पुत्तरी भी खेती से संबधित एक त्योहार है। जिसे केरल - कर्नाटका के कुछ भागे में मनाया जाता है। त्याहोर का उद्धेश है लोगो में एकता, प्यार बनाये रखना। सभी लोगो को जोड़ कर रखना। इसलिए हम कहसकते है कि कृषी और हमारी संस्कृति आपास में जुड़े हुए है। अगर हम इन त्योहारों को आगे बड़ाएगे और साथ मिलकर त्योहौर मनाएँगे तो हम हमारे

संस्कृति और खेती को बड़ा सकते हैं।

"कोशिश करनेवालो की कभी हार नहीं होती" उसी तरह अगर हम लोग साथ मिलेंगे तो कुछ भी ना मुमकिन नहीं है।